Preface

आमुख

सन् १६५३ में अध्ययनार्थ जब मैं बड़ौदा आया था तब एक मित्र के पास गुजराती के प्रसिद्ध कवि श्री दयाराम कृत सतसई देखने को मिली थी। उस सतसई को पढ़कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ था कि एक गुजराती भाषी कवि ने हिन्दी में इतनी अच्छी रचना की है और हिन्दी जगत् अब तक उससे अपरिचित ही है। बाद में अपने कुछ मित्रों की सहायता से गुजरात के अन्य कई हिन्दी कवियों की रचनाएं देखने को मिलीं तथा श्री डाह्या भाई पीताम्बर दास देरासरी कृत "गुजराती और हिन्दी साहित्य मां आपेलो फाड़ो" नामक रचना भी देखने को मिली, जिसमें ४५ गुजरात के हिन्दी कवियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। म०स० विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति श्रीमती हंसा बहिन मेहता तथा प्रोप कुलपति डा० चतुर भाई पटेल के साथ इस विषय की चर्चा करते समय मुझे पूरा आश्वासन मिला था कि योग्यता प्राप्त कर लेने के पश्चात यदि मैं इस विषय पर शोध कार्य करूंगा तो वे मेरी हर प्रकार से सहायता करेंगे। कला संकाय के तत्कालीन अधिष्ठाता स्वर्गीय श्री गंगा शंकर पंड्या ने न केवल यह सब कुछ मुझसे कहा था, वरन् मुझे इस योग्य बनाया भी, कि आज मैं उनके बताए हुए विषय पर शोध कार्य कर सका हूं। अत: अपने इस शोध कार्य के मूल प्रेरक श्री ललित किशोर शर्मा, कुमारी मधु मालती चौकसी तथा श्री सुमन भाई अमीन के प्रति अपना आभार भाव व्यक्त करता हूं। श्रीमती हंसा बहिन मेहता डा० चतुर भाई पटेल ने जो मुझे प्रेरणा तथा सहायता प्रदान की है, उसके लिए मैं उनका सदा आभारी रहूंगा। स्वर्गीय श्री गंगा शंकर पंड्या ने जो मुझे प्रेरणा, सहायता तथा योग्यता प्रदान की है, उसके लिए आभार भाव व्यक्त करने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे। आज मैं श्रद्धापूर्वक उनका स्मरण करता हूं, उन्हें प्रणाम करता हूं।

स्वर्गीय श्री गंगा शंकर पंड्या के आशीर्वादों के रूप में ही मुझे आदरणीय श्री कुंवर चंद्र प्रकाश सिंह गुरु रूप में प्राप्त हुए हैं, जिन्होंने न केवल मुझे हिन्दी में विधिवत् दीक्षित किया है, वरन् मुझे सब प्रकार से इस योग्य बना दिया है कि आज मैं इस शोध प्रबन्ध के रूप में उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकता हूं। म०स०विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अंतर्गत गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के विषय में श्री कुंवर साहिब ने जो योजना प्रवर्तित की है, उसका सर्वाधिक लाभ मुझे ही प्राप्त हुआ है। सन् १९६० में सोनगढ़ से जब वे श्री गोविन्द गिल्ला भाई के संग्रहालय की बहुत सी सामग्री लेकर बड़ौदा आये थे, तब प्रथम दिन ही उन्होंने मुझे आदेश दिया था कि मैं "गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा तथा आचार्य कवि गोविन्द गिल्ला भाई" इस विषय पर शोध कार्य करूं। इतना ही नहीं, वरन् आगे उन्होंने मुझे इस शोध प्रबन्ध के लेखन में हर प्रकार की सहायता प्रदान की है। वस्तुतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध उनकी प्रेरणा, सहायता तथा निर्देशन का ही परिपाक है। ऐसी स्थिति में मैं सोच नहीं पा रहा कि किन शब्दों में उनके प्रति अपना आभार भाव व्यक्त करूं।

मेरे मित्र तथा भूतपूर्व विभागीय सहयोगी डा० अम्बा शंकर नागर प्रथम व्यक्ति हैं, जिन्होंने गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के विषय में पीएच०डी० की उपाधि के लिए शोध कार्य किया है। उन्होंने अपना शोध प्रबन्ध मुझे अध्ययनार्थ देकर तथा समय समय पर इस विषय पर मेरे साथ चर्चा करके, जो मुझे सहायता प्रदान की है, उसके लिए मैं हृदय से उनका आभार मानता हूं। मैं अपने विभाग के अन्य सहयोगियों तथा मित्रों का भी आभारी हूं, जिन्होंने अनेक रूपों में मेरी सहायता की है। डा० सुरभि त्रिवेदी, प्राध्यापक संस्कृत विभाग, का मैं विशेष रूप से आभारी हूं, जिनकी प्रेरणा से परिसमाप्ति तक के सतत सहयोग के बिना प्रस्तुत शोध प्रबन्ध अभी पूरा न हुआ होता। अपने विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के प्राध्यापक श्री रमानन्द गोलरकरी जी का मैं हृदय से आभारी हूं, जिन्होंने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लिए गुजरात का मान चित्र तथा ग्राफ तैयार करवाने में मेरी विशेष सहायता की है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र, डा०नगेन्द्र,

डा० भगीरथ मिश्र, स्वर्गीय नलिन विलोचन शर्मा आदि हिन्दी के वरिष्ठ विद्वानों के साथ मैंने अपने विषय की चर्चा की है तथा उनके अभिमतों का अपने शोध प्रबन्ध में उपयोग किया है । अत: मैं श्रद्धापूर्वक उनके प्रति अपना आभार भाव व्यक्त करता हूं ।

अंत में अपने विश्वविद्यालय के सभी वरिष्ठ अधिकारियों तथा साथी प्राध्यापकों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने अनेक रूपों में इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में मेरी सहायता की है । अपने हिन्दी प्रेमी व्यवसायी मित्र श्री रामदयाल विश्वकर्मा को मैं इस समय विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं, क्योंकि उनके टाइपराइटर के बिना शोध प्रबन्ध की अंतिम प्रति अभी तैयार न हुई होती ।

प्रथम वक्तव्य

किस रूप में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ज्ञान के सामान्य संवर्धन में सहायक सिद्ध होता है

विशुद्ध संवैधानिक दृष्टि से आज भारतीय राष्ट्र तथा उसकी राष्ट्र-भाषा हिन्दी के विषय में किसी प्रकार की शंका नहीं की जा सकती । परन्तु इनकी ऐतिहासिकता के विषय में आज भी विद्वानों में मतैक्य नहीं मिलता । सामान्यत: पश्चिमी विद्वानों तथा उनके अनुवर्ती कुछ भारतीय विद्वानों की यह धारणा रही है कि भारत शब्द एक भौगोलिक देश विशेष की संज्ञा है, जिस देश में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व किसी प्रकार की सार्वभौम एकता नहीं मिलती । परिणाम स्वरूप ऐतिहासिक दृष्टि से भारत को एक राष्ट्र नहीं माना जा सकता । साथ ही अंग्रेजों के भारत में आने से पूर्व यहां कोई अखिल देशीय भाषा भी नहीं रही । इसीलिए आज इस देश में राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रभाषा की समस्या है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में विद्वानों की उक्त धारणा के विरुद्ध यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि अपने इतिहास के आदिकाल से भारत एक राष्ट्र है तथा उसमें एक अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रीय साहित्य की अविच्छिन्न

परम्परा भी अत्यन्त प्राचीन काल से मिलती है । हिन्दी भाषा और साहित्य इसी अखिल भारतीय राष्ट्रभाषाओं तथा साहित्यिक परम्पराओं के आधुनिक रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं । भारतवर्ष के प्राय: सभी अहिन्दी भाषी प्रान्तों की हिन्दी काव्य परम्पराएं इस मान्यता के प्रमाण के रूप में निरूपित की गयी हैं ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भारत को ऐतिहासिक दृष्टि से राष्ट्र मान, उसकी अखिल भारतीय भाषाओं की और उनके साहित्यों की परम्पराओं को भारतीय राष्ट्रीयता के प्रतिमान के रूप में निरूपित किया गया है । इस भूमिका पर हिन्दी भाषा और साहित्य की अखिल भारतीय परम्पराओं का विवेचन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का मूल विषय अहिन्दी भाषी प्रान्तों की हिन्दी काव्य परम्पराओं से संबंधित है, जो भारत के विभिन्न प्रान्तों में लगभग १३वीं शताब्दी से अविच्छिन्न रूप से प्राप्त होती हैं । अहिन्दी भाषी प्रान्तों में प्राचीन काल से हिन्दी की काव्य परम्पराओं का प्राप्त होना हिन्दी को ऐतिहासिक दृष्टि से राष्ट्रभाषा सिद्ध करता है । हिन्दी के इतिहासकारों ने अब तक इस तथ्य की उपेक्षा की है, परन्तु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इस मान्यता को समूचे शोध का मुख्य आधार माना गया है ।

भारत की प्राचीन राष्ट्रभाषाओं के साहित्य की परम्परा में हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप का विवेचन कर, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का विवेचन किया गया है, जो उसके राष्ट्रीय महत्त्व का द्योतक है । भारत के अन्य अहिन्दी भाषी प्रान्तों की हिन्दी काव्य परम्पराओं की तुलना में गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का विशेष रूप से व्यापक तथा समृद्ध होना, उसके विशेष साहित्यिक महत्त्व का परिचायक माना जा सकता है, जिसका सकारण विवेचन किया गया है ।

गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का वैशिष्ट्य उसके शास्त्रीय साहित्य तथा काव्य के आधार पर सिद्ध होता है, जो अन्य अहिन्दी भाषी प्रान्तों की हिन्दी काव्य परम्पराओं में दृष्टिगोचर नहीं होता ।

श्री गोविन्द गिल्ला भाई गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के उक्त वैशिष्ट्य की निरूपिका शास्त्रीय काव्य तथा शास्त्रीय साहित्य की धारा के एक प्रमुख आचार्य एवं कवि हैं तथा आधुनिक काल के गुजरात के हिन्दी साहित्य के भी प्रतिनिधि कवि हैं । अत: गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के सामान्य परिचय तथा गुजरात के शास्त्रीय हिन्दी काव्य तथा साहित्य की परम्परा के विशेष विवेचन के पश्चात श्री गोविन्द गिल्ला भाई के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का विशेष अध्ययन कियागया है ।

श्री गोविन्द गिल्ला भाई के जीवन चरित्र तथा व्यक्तित्व के अध्ययन के पश्चात उनके कृतित्व की आधारभूत सामग्री - उनकी कृतियों का विवरणात्मक अध्ययन किया गया है, जिसके आधार पर उनके कृतित्व के स्वरूप तथा प्रमुख प्रकारों का सामान्य परिचय पाकर, उनके कवित्व तथा आचार्यत्व का विशेष अध्ययन किया गया है । आशय यह कि हिन्दी काव्यशास्त्र तथा समीक्षा के आधार पर गोविन्द गिल्ला भाई के काव्य ग्रंथों तथा शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन किया गया है ।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की निम्नलिखित विशेष स्थापनाएं मानी जा सकती हैं :

(१) भारतीय साहित्य तथा संस्कृति के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत एक राष्ट्र है ।

(२) भारत में एक अखिल भारतीय राष्ट्र भाषा की प्राचीन परम्परा मिलती है, जिसका प्रतिनिधित्व आज हिन्दी करती है ।

(३) हिन्दी १३वीं शताब्दी से भारत की राष्ट्रभाषा रही है एवं भारतीय राष्ट्र के प्रत्येक प्रान्त में उसकी समृद्ध परम्पराएं मिलती हैं ।

(४) गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा हिन्दी की उक्त राष्ट्रीय परम्परा की एक विशेष रूप से समृद्ध धारा है ।

(५) शास्त्रीय काव्य तथा साहित्य की समृद्ध परम्परा गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की एक प्रमुख विशेषता है, जिसका आधुनिक रूप गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व में देखा जा सकता है ।

(६) कवित्व तथा आचार्यत्व गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व के दो प्रमुख रूप हैं, जिनमें कवित्व पूर्णत: रीतिकालीन है, जबकि आचार्यत्व कुछ आधुनिकता को लिए हुए है ।

(७) गोविन्द गिल्ला भाई एक सामान्य कवि तथा विशेष आचार्य थे । उनके कृतित्व का जितना मूल्य साहित्यिक दृष्टि से घटता है, उतना राष्ट्रीय दृष्टि से बढ़ जाता है ।

द्वितीय वक्तव्य

स्रोत, सहायता तथा मौलिकता

गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा किसी न किसी रूप में हिन्दी के विद्वानों तथा इतिहासकारों में प्रारम्भ से ही जानी पहिचानी है । शिवसिंह सरोज में गुजरात के कुछ हिन्दी कवियों का उल्लेख मिलता है । ५० से कुछ अधिक गुजरात के हिन्दी कवियों का उल्लेख 'मिश्रबंधु विनोद' में भी मिलता है । इसी प्रकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के हिन्दी साहित्य के इतिहास आदि ग्रंथों में कुछ गुजरात के हिन्दी कवियों का उल्लेख आया है । इतना ही नहीं, गुजरात के कुछ विद्वान भी अपने प्रान्त के हिन्दी कवियों के विषय में जागरूक थे । अक्टूबर सन् १९२१ में 'गुजराती' नामक मासिक पत्रिका में रा०रा० जगजीवनदास दयाल जी मोदी ने "गुजरात नुं हिन्दी साहित्य" नाम से एक सुन्दर लेख लिखा है, जिसमें गुजरात के २२ कवियों का सामान्य परिचय दिया गया है । सन् १९३६ में श्री डाह्याभाई पीताम्बरदास देरासरी ने 'गुजरातीओए हिन्दी साहित्य मां आपेलो फाड़ो' नामक

एक लघु पुस्तिका प्रकाशित की थी, जिसमें करीब ४५ गुजरात के हिन्दी कवियों तथा उनकी कृतियों का परिचय मिलता है । डा० अम्बाशंकर नागर ने कुछ समय हुआ गुजरात की हिन्दी सेवा विषय पर एक शोध प्रबन्ध लिखा है ।

आशय यह कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा बिलकुल अज्ञात विषय नहीं है । परन्तु जिस रूप में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का स्वरूप निरूपित किया गया है, वह मौलिक है । साथ ही बहुत सी अज्ञात सामग्री प्रकाश में आई है, जिसका श्रेय मुख्यत: म०स०विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आचार्य कुंवर चंद्र प्रकाश सिंह द्वारा प्रवर्तित शोध योजना को है । प्रस्तुत लेखक ने उस शोध योजना के अंतर्गत न केवल कार्य किया है, वरन् स्वयं अपनी व्यक्तिगत शोधों के आधार पर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पुष्ट किया है ।

आशय यह कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध से संबद्ध ज्ञात समूचा प्रकाशित तथा हस्तलिखित साहित्य प्रस्तुत लेखक द्वारा पढ़ लिया गया है तथा अपनी स्थापनाओं की सिद्धि के लिए यथास्थान उपयोग किया गया है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की स्थापनाएं उक्त साहित्य के आलोचनात्मक अध्ययन, नवीन शोधों तथा अपने चिन्तन पर आधारित हैं ।

(माणिकलाल गो० चतुर्वेदी)

शोध प्रबन्ध का प्रारूप

प्रथम अध्याय : भूमिका

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय और उसकी व्याख्या, प्रस्तुत अध्ययन की प्रविधि, प्रथम अध्याय का प्राक्कथन, राष्ट्रीयता एवं उसके प्रतिमान, भारतीय राष्ट्रीयता, भारतीय राष्ट्रीयता के प्रतिमान, भाषायी एकता: परम्परा और हिन्दी, साहित्यिक एकता: परम्परा और हिन्दी, उपसंहार ।

द्वितीय अध्याय : गुजरात की हिन्दी काव्य परंपरा - परिचय एवं वैशिष्ट्य

प्राक्कथन, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के कारण - भौगोलिक स्थिति, राजनैतिक परिस्थिति, सांस्कृतिक एकता, भाषायी समानता, साहित्यिक समानता, गुजरात में हिन्दी, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का परिचय, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता, समय के आधार पर, प्रदेश के आधार पर, सामाजिक आधार पर, धार्मिक आधार पर, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की समृद्धि, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का वैशिष्ट्य निरूपण, उपसंहार ।

तृतीय अध्याय : गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा - वर्गीकरण एवं व्याख्या

प्राक्कथन, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का वर्गीकरण, गुजरात के हिन्दी काव्य परम्परा के वर्गीकरण की व्याख्या, गुजरात का लौकिक हिन्दी साहित्य- शास्त्रीय साहित्य, शास्त्रीय काव्य, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा और आचार्य कवि गोविंद गिल्ला भाई, उपसंहार ।

चतुर्थ अध्याय : आचार्य कवि गोविंद गिल्ला भाई का जीवनवृत्त तथा व्यक्तित्व

प्राक्कथन, सम सामयिक एवं प्रादेशिक भूमिका, अध्ययन की आधारभूत सामग्री, जीवन वृत्त- जाति और वंश परिचय, जन्म तथा बाल्यावस्था, शिक्षा दीक्षा और ज्ञानार्जन, हिन्दी काव्य रचना, पारिवारिक जीवन, भ्रमण तथा यात्रा, आजीविका, इतर प्रवृत्तियां- लोक जीवन, साहित्यिक प्रवृत्तियां, व्यक्तित्व, उपसंहार ।

पंचम् अध्याय : आचार्य कवि गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व - कृति परिचय

प्राक्कथन, गोविन्द गिल्ला भाई की कृतियों का उल्लेख तथा उपलब्धि, उपलब्ध तथा उल्लिखित कृतियों का तारतम्य, उपलब्ध कृतियों का परिचय - अध्ययन की आधारभूत प्रति, वर्ण्य विषय, छंद विश्लेषण, रचना काल, शेष साहित्य, उपसंहार।

षष्टम् अध्याय : आचार्य कवि गोविंद गिल्ला भाई का कृतित्व - स्वरूप एवं विकास

प्राक्कथन, कृतित्व का स्वरूप, सामान्य परिचय तथा वर्गीकरण, कवित्व - स्वरूप एवं विकास, आचार्यत्व - स्वरूप एवं विकास, उपसंहार ।

सप्तम् अध्याय : आचार्य कवि गोविंद गिल्ला भाई का कवित्व

प्राक्कथन, कवित्व की सीमा तथा वर्गीकरण, काव्यादर्श, शृंगारकाव्य - ऐतिहासिक भूमिका तथा गोविन्द गिल्ला भाई का शृंगार काव्य, नीति काव्य - ऐतिहासिक भूमिका तथा गोविन्द गिल्ला भाई का नीति काव्य, भक्ति काव्य- ऐतिहासिक भूमिका तथा गोविंद गिल्ला भाई का भक्ति काव्य, मूल्यांकन, उपसंहार ।

अष्टम् अध्याय : आचार्य कवि गोविन्द गिल्ला भाई की काव्य कला

प्राक्कथन, काव्य रूप, काव्य शिल्प - छंद योजना, अलंकार प्रयोग, भाषा प्रयोग, शैली, मूल्यांकन, उपसंहार ।

नवम् अध्याय : आचार्य कवि गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व

प्राक्कथन, आचार्यत्व का अर्थ, हिन्दी आचार्यत्व के विभिन्न रूप, गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व - स्वरूप एवं प्रकार, अलंकार निरूपण - भूमिका, अलंकार विषयक धारणा, अलंकार विवेचन, नायक नायिका भेद निरूपण - भूमिका, नायिका भेद, नायक भेद, सखी आदि निरूपण, शेष काव्यांग निरूपण - काव्य लक्षणादि वर्ग, रसादि वर्ग, छंदादि वर्ग, भाषादि वर्ग, उपसंहार ।

दशम् अध्याय : आचार्य कवि गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व का वैशिष्ट्य

प्राक्कथन, गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व की व्याप्ति तथा वैशिष्ट्य, आचार्यत्व के शेषांगों का अध्ययन, कवि शिक्षा, नीति शास्त्र, भक्तिशास्त्र, व्याकरण कोषादि, टीका, अनुवाद, संग्रह, शोध कार्य, उपसंहार ।

परिशिष्ट

परिशिष्ट प्रथम : गुजरातेतर अहिन्दी भाषी प्रान्तों के हिन्दी कवि ।
परिशिष्ट द्वितीय-`अ` : गुजरात के हिन्दी कवि तथा उनकी रचनाएं ।
,, ,, `ब` : गुजरात के राजवंशी हिन्दी कवि ।
,, तृतीय -`अ` : गुजरात के अल्पज्ञात हिन्दी कवि ।
,, ,, -`ब` : गुजरात की हिन्दी रचनाएं - जिनके लेखक अज्ञात हैं ।
,, चतुर्थ -`अ` : साहित्य चिंतामणि में संगृहीत छंदों के कवियों की नामावली ।
,, ,, -`ब` : गोविन्द हजारा में संगृहीत छंदों के कवियों की नामावली ।
,, ,, -`स` : गोविन्द हजारा में उल्लिखित ग्रंथों की नामावली ।
,, पंचम -`अ` : प्रेम प्रभाकर के विषयों का विवरण ।
,, ,, -`ब` : प्रेम प्रभाकर में संगृहीत छंदों के कवियों की नामावली ।
,, ,, -`स` : प्रेम प्रभाकर में उल्लिखित ग्रंथों की नामावली ।
,, षष्टम्- : गोविन्द गिल्ला भाई के संग्रह की प्राप्त एवं ज्ञात सामग्री का विवरण ।
,, सप्तम् - : गोविंद गिल्ला भाई की प्रशस्ति में लिखे गये छंदों का संग्रह ।